कृषि किरण अंक-10, दिसंबर 2020: पृष्ठ: 41-44
http://saaer.org.in

पोलीहाउस में जरबेरा की खेती

प्रियंका कुमारी जाट[1] और मुरारी लाल चोपड़ा[2]

[1](उधान विभाग) राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर

[2](उधान विभाग) श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविधालय, जोबनेर, जयपुर

जरबेरा को "अफ्रीकन डेंजी" के नाम से भी जाना जाता है। यह बहुवर्षीय कर्तित पुष्प वाला पोधा हें। एवम कर्तित पुष्पों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। जरबेरा की खेती बिना पोलीहाउस के भी की जा सकती है। परन्तु खुले स्थान पर जरबेरा लगाने पर पोधो की अच्छी वृद्धि नहीं हो पाती जिसके परिणामस्वरूप फूलो की गुणवता पर असर पडता है, और बाजार में अच्छा मूल्य नहीं मिल पाता है। अत अच्छी गुणवता के फूल लेने के लिए जरबेरा को पोलीहाउस/ ग्रीनहाउस में ही उगाना चाहिए। पोलीहाउस एक विशिष्ट आकार की सरंचना होती हें, जिसको 200 से 400 माइक्रोन मोटाई वाली पराबैंगनी विकिरणों से अवरोधी, सफेद रंग की पारदर्शी प्लास्टिक चादर से ढका जाता है। कम क्षेत्रफल में अधिकतम लाभ कमाने के लिए यह एक उतम तकनीक है। हालांकि इसमे प्रारम्भिक खर्च अधिक लगता है। परन्तु भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओ का लाभ भी इसमे मिलता है। ग्रीनहाउस में फूलों के उत्पादन की तकनिक भारत के लिए नई है। इसी कारण सभी इकाईयों को होलैंड, इजराईल तथा अन्य देशो के सहयोग से चलया गया है।

पोलीहाउस के फायदे:

- पोलीहाउस में इच्छित वातावरण बनाकर सभी तरह के फूल पुरे वर्षभर पैदा किये जा सकते है।
- किसी भी फूल वाली फसल को किसी भी स्थान पर, किसी भी मोसम में पैदा किया जा सकता है।
- पोलीहाउस में अच्छे गुणवता युक्त फूल पैदा किये जा सकते है। इसलिए पोलीहाउस में पैदा किये गए फूल निर्यात के लिए ज्यादा उपयुक्त होते है।
- जिन क्षेत्रों में परंपरागत खेती नहीं की जा सकती, उनमे पोलीहाउस की मदद से फूल पैदा करने की संभावनाए बढ़ जाती है।
- शहरी एवम् सीमांत किसानों के लिए लाभकारी है।

- फसलों में लगने वाले कीट व् बीमारियों की आसानी से सुरक्षा होती है।
- प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक उत्पादन होता है।

पोलीहाउस की कुछ सीमाये:

- पोलीहाउस बनवाने में किसानों को प्रारम्भ में ज्यादा पूंजी लगानी पड़ती है।
- यह केवल व्यासायिक एवम् बागवानी फसलों के लिए ज्यादा उपयोगी हैं ! दूसरी फसलों के लिए नहीं।

जलवायु: जरबेरा को दिन में मध्य में सूर्य के अधिक प्रकाश एवम् तापमान से फसल को बचाने के लिए 60 प्रतिशत छायादार नेट अथवा जाली का प्रयोग करे। जरबेरा के फूलों के अधिक उत्पादन हेतु दिन का तापमान 18 से 24 डिग्री सेल्सियस तथा रात का तापमान 12 से 14 डिग्री सेल्सियस रहना चहिये। पोलीहाउस में 60-70 प्रतिशत की आपेक्षिक आद्रता अच्छे पुष्प उत्पादन के लिए जरूरी है। तथा कार्बन डाईआक्साइड का स्तर 1000 से 1500 पी. पी. ऍम बना रहना चहिये।

पोलीहाउस के लिए युक्त किस्मे: व्यवसायिक पुष्प उत्पादन के लिए सही किस्मो का चुनाव बहुत जरूरी हैं ! इसलिए एसी किस्मो का चुनाव करना चाहिए जिनका तना लम्बा, फूल का प्रकार डबल व अधिक पखुडियाँ है। सांगरिया, सनसेट, तारा, जपाका, चोनी, रोजेरियन, रोजुला, सलीना, टिकोरा एवम स्टार लाइट आदि जरबेरा की उन्नत किस्मे है। तलिकानुसार है।

पुष्प के रंग के आधार पर	किस्मों का नाम
लाल	ब्यूटी ,सनी बॉय , सांगरिया
संतरी	ओरनेला, आप्टीमा , सनसेट तारा
सफेद	व्हाइट सन, ओलीबिया
पीला	अरुबा ,गोल्डन फीवर , गोल्ड सपोट ,गोल्डन गेट
गुलाबी	डाराबेल ,पिफयोया , रोजबोला

प्रवर्धन :

जरबेरा का प्रवर्धन मुख्य रूप से सकर्स के द्वारा किया जाता है। जून के महीने में पुरे पोधे को उखाड़ कर उसके सभी सकर्स को अलग कर लिया जाता है। ओसतन एक पोधे से एक वर्ष में 5 से 7 सकर्स प्राप्त किये जा सकते है। तथा माइक्रोसंवर्धन द्वारा कम समय में एक ही पोधे से अधिक संख्या में सवस्थ पोधे तेयार किये जा सकते है।

पोधो की रोपाई: जरबेरा के पोधो के रोपाई बसंत ऋतुमें (जनवरी से मार्च) तथा गर्मी में (जून से अगस्त) कर सकते है। पोधो की रोपाई पंक्ति से पंक्ति 30-40 सेंटीमीटर एवम पोधे से पोधे की दूरी 20 से 30 सेंटीमीटर पर करना उचित रहता है। पोधो को रोपते समय ध्यान रखे की पोधो का क्राउन 1 से 2 सेंटीमीटर जमीन से ऊपर होना चहिये एवम जड़ तंत्र का नहीं छोड़ना चहिये।

सिंचाई: ड्रिप (टपका) सिंचाई प्रणाली एक नवीन पद्धति हैं,टपका विधि द्वारा पोधो को बूंद - बूंद के रूप में पोधे की जड़ क्षेत्र में उपलब्ध कराया जा सकता है। ड्रिप विधि से जल के साथ - साथ उर्वरक, कीटनाशक व अन्य घुलनशिल रसायनिक तत्वों को भी सीधे पोधो तक पहुँचाया जा सकता है।

फर्टिगेशन: सिंचाई जल के साथ पोषक तत्व देने की विधि को फर्टिगेशन कहते है। समय - समय पर इसमे बूंद- बूंद सिंचाई पद्धति द्वारा पोषक तत्वों को देते है। नत्रजन, फास्फोरस एवम पोटाश 12:8:25 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दार से डालना चहिये। सूक्ष्म तत्वों जेसे आयरन, जिकं, बोरान, कॉपर और मैग्नीशीयम आदि की उचित मात्रा को 0.2 प्रतिशत घोल के रूप में अथवा फ्लावर बूस्टर द्वाराएक महीने के अन्तराल पर देते रहना चहिये।

फूलो की कटाई: कटाई की उपयुक्त अवस्था का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है। फूल अतिशिघ्र नाशवान प्रकृति के होते है। अत: इनकी कटाई या तो जल्दी सुबह या फिर देर शाम के समय, जब तापमान कम हो, करनी चहिये। फूलो को मुख्यत: उस समय तोड़ना चहिये, जब फूल के एक दो रे -फ्लोरेट्स पूरी तरह से खुल जाए। सामान्यतया कटाई का सही समय पोधो की प्रजाति, किस्म, मोसम, मंडी की दूरी तथा उपभोक्ताओ की पसंद पर निर्भर करनी है।

उपज:

जरबेरा के कतीर्त पुष्पों की पैदावार कई कारको जेसे: पोलीहाउस का वातावरण, उगाई जाने वाली किस्म, पोधे की आयु, रख - रखाव तथा प्रति वर्ग मीटर रोपित पोधे की संख्या पर निर्भर करती है। जरबेरा की सामान्यत: 24-30 महीने की फसल होती हें ! पोधे को लगाने के बाद 3-4 महीने में फूल आने शुरु हो जाते है। पोलीहाउस में ओसतन 250 - 300 फूल प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष प्राप्त होते है। जिनमे 75 - 80 प्रतिशत तक प्रथम श्रेणीके पुष्प होते है। फूल तोडते के

बाद उनको पानी में 3-4 घंटे के लिए रखना चहिये।

कीट एवम रोग नियंत्रण:

पोलीहाउसमें उचित प्रबंधन एवम रख - रखाव होने पर फसलों में कीट एवम रोगों का प्रकोप नहीं होता। लेकिन कुछ जैसे: सफेद मक्खी, पत्ती-छेदक, चेंपा तथा स्पोडोप्टेरा सुंडी का प्रकोप आम बात है। इनकी रोगथाम के लिए येलो कार्ड (सफेद मक्खी, चेपा के लिए) तथा फेरोमेन ट्रेप और लाईट ट्रेप (स्पोडोप्टेरा सुंडी के लिए) लगाने चहिय! अधिक आक्रमण होने पर क्रमश: मेतासिस्टाफोस एवम मोनोक्रोटोफोस का 1.5 से 2.0 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकावकरना चहिये। स्पोडोप्टेरा सुंडी को चुन- चुन कर एकत्र करके 2 फीट गहरे गड्डे में दबा दें। कभी-कभी अधिकाअधिक नमी होने के कारण क्राउन विगलन, पाउडरी मिल्ड्यू तथा फ्युजेरिमयम की बीमारी आती हैं और इसके बचाव के लिए क्रमशः कार्बेन्डाजिम, कॉपर आक्सीक्लोराइड एवम केप्टान तथा बाविस्टिन 1.5-2.0% मात्रा के रासयनिक घोल का 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करते रहना चहिये।